❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य समाज की सभी चल रही योजनाओं प्रकल्पों, वेबसाइट, मोबाइल एप्लीकेशन, सोशल मिडिया हैंडल्स का उपयोग करने हेतु

8750-200-300

मिस्ड कॉल करें

SMS पर प्राप्त होने वाला लिंक खोलें

वर्ष 48, अंक 36 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 30 जून, 2025 से रविवार 6 जुलाई, 2025

विक्रमी सम्वत् 2082 सृष्टि सम्वत् 1960853126

दयानन्दाब्द : 202 पृष्ठ : 8

वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150

ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

विश्वभर में हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों के समापन के रूप में

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - दिल्ली
30-31 अक्तूबर - 1-2 नवम्बर, 2025 (गुरु-शुक्र-शनि-रवि)

आर्य समाज के लिए क्यों है महासम्मेलन का अवसर विशेष

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की दुंदुभी बज चुकी है, आर्यों के महापर्व का सिंहनाद हो चुका है, संपूर्ण भारत और विश्व के 40 देशों में सन्देश पहुंच चुका है, जिस अवसर की आर्य जगत को बेसब्री से प्रतीक्षा थी, वह अब हमारे सामने है, हर आयु वर्ग के आर्यजन, स्त्री, पुरुष बालक, बालिकाएं अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025, दिल्ली में पधारने के लिए अत्यंत उत्साह और उमंग से भरपूर हैं। क्योंकि यह अवसर ही कुछ ऐसा अद्भुत और अनुपम है। आर्य समाज द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150 वें स्थापना वर्ष के 2 वर्षीय आयोजनों का शुभारंभ 12 फ़रवरी 2023 को नई दिल्ली के इंदिरा गांधी इण्डोर स्टेडियम में हुआ था, जिसमें भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी को नमन किया था। आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास की अपनी चिपरिचत शैली में कराया था और आर्य समाज के सेवाकार्यों की उन्मुक्त हृदय सराहना की थी, उस समय आपने आर्यजनों को संबोधित करते हुए कहा था कि ये आयोजन दो वर्ष तक अनवरत चलेंगे, 2024 में महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200 वीं जयंती, जिसे आर्य समाज ने ऋषि की जन्मभूमि टंकारा में ऐतिहासिक रूप से मनाया, जिसमें स्वयं भारत राष्ट्र की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मु ने पहुंचकर कृतज्ञता ज्ञापित की, 2025 में आर्य समाज का स्थापना दिवस मुंबई में मनाया गया, भारत के विभिन्न प्रान्तों और देश विदेश में हर्षोल्लास से सफ़लता पूर्वक निरंतर उसके आयोजन हो रहे हैं, प्रधानमंत्री जी ने तो 2026 में स्वामी श्रद्धानंद जी के 100वें बलिदान दिवस को लेकर भी कहा था कि आर्य समाज के ये आयोजन तीन वर्ष तक चलने वाले हैं। किन्तु यहां दो वर्षीय आयोजनों के समापन समारोह के रूप में सार्द्ध शताब्दी अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 को ही सामने रखकर विचार किया जाए तो यह अवसर अपने आप में अत्यंत विशेष बनकर आया है।

पिछले दो वर्षों में आर्य समाज द्वारा भारत के कोने-कोने में और विदेशों में

- शेष पृष्ठ 7 पर

प्रत्येक आर्यसमाज एवं आर्यजन करें प्रचार

समस्त आर्यसमाजों एवं आर्यजनों अनुरोध है कि सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तिथियां नोट करें ले और सोशल मीडिया तथा प्रिंट मीडिया के प्रत्येक प्लेटफार्म पर इसका प्रचार करें। आर्यसमाजें अपने साप्ताहिक सत्संगों में नियमित रूप से इसकी सूचना दें, अपने आर्यसमाज की बैठक आमन्त्रित करें और समिति गठित करें तथा समाज के प्रत्येक सदस्य को सपरिवार पहुंचने के लिए प्रेरित करें। इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को भव्य, विराट एवं ऐतिहासिक बनाने में आप सबका सहयोग सादर अपेक्षित है। **इस आर्यसन्देश के पृष्ठ 4-5 पर दिया गया पोस्टर अपनी आर्यसमाज के नोटिस बोर्ड तथा सार्वजनिक स्थानों पर प्रदर्शित करें।**

- ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति

समय दानी आर्यजन कृपया ध्यान दें

सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025 के आयोजन 30-31 अक्तूबर एवं 1-2 नवम्बर, 2025 की आयोजन तथा आयोजन से पूर्व तथा पश्चात् की व्यवस्थाओं तथा उसके लिए गठित होने वाली विभिन्न समितियों में सहयोग करने के लिए सभी आर्यजनों एवं कार्यकर्ताओं से समय दान करने का निवेदन किया जाता है। अत: जो आर्यजन **कम से कम 7 दिन का समय** सम्मेलन की व्यवस्थाओं में सहयोगी बनने के लिए दान करना चाहें, वे कृपया अपना नाम, मो.न. एंव विवरण तथा किन तिथियों में समय में कब से कब तक का समय दान कर सकते हैं **9311721172** पर नोट करा दें। हमारे कार्यकर्ता शीघ्र ही आपसे सम्पर्क स्थापित करेंगे।

- ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति

सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025
ऐतिहासिक रूप से भव्य, सफल एवं प्रेरणाप्रद बनाने हेतु
सुझाव आमन्त्रित

समस्त सुधी पाठकों, वैदिक विद्वानों, लेखकों, चिन्तकों, आर्यसमाज के हितैषी महानुभावों से अनुरोध है कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को सफल और प्रेरणाप्रद बनाने के लिए अनुभवों के आधार पर अपने उपयोगी सुझाव अवश्य प्रदान करें। आपने वर्ष 2006 के उपरान्त तथा इससे भी पूर्व में आयोजित महासम्मेलनों में भाग लिया है। इन सम्मेलनों में आपको कुछ व्यवस्थाएं अच्छी लगी होंगी तथा कुछ में सुधार की अपेक्षा भी रही होगी।

अत: आपसे निवेदन है कि आने वाले सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को ऐतिहासिक रूप से सफल और अविस्मरणीय बनाने के लिए कृपया अपने सुझाव **15 जुलाई 2025** तक भेजने की कृपा करें, जिससे उन सुझावों पर विचार करके उन्हें प्रयोग में लाया जा सके। कृपया अपने सुझाव निम्न पते पर भेजें अथवा ईमेल करें -

संयोजक समिति

सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001, मो. 9311721172

Email:aryasabha@yahoo.com

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती एवं आर्यसमाज की सार्ध शताब्दी (150वें) वर्ष

के आयोजनों की श्रृंखला में

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर द्वारा

ज्ञान, संस्कृति, धर्म प्रचार-प्रसार समारोह

एवं

प्रांतीय आर्य महासम्मेलन

कार्यक्रम

दिनांक : 19-20 जुलाई 2025 (शनिवार-रविवार)

समय : प्रातः 8 बजे से सायं 7 बजे तक

स्थान : बाबा जित्तो सभागार (ऑडिटोरियम), शेर-ए-कश्मीर विश्वविद्यालय, चट्ठा, जम्मू

आप सब सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं

निवेदक

नरेन्द्र त्रेहन, प्रधान, 9419182941

राजीव सेठी, मन्त्री, 9419182553

योगेश गुप्ता, कोषाध्यक्ष, 7006579919

देववाणी-संस्कृत

अमरता

वेद-स्वाध्याय

जुहुरे वि चितयन्तोऽनिमिष नृम्णं पान्ति।आदृळ्हां पुर विविशुः।।
-ऋ० 5।19।2
ऋषिः- आत्रेयो वव्रिः।। देवता-अग्निः।। छन्दः-गायत्री।।

शब्दार्थ - जो **वि चितयन्तो जुहुरे** = ज्ञानपूर्वक स्वार्थ-त्याग करते हैं और **अनिमिषं नृम्ण पान्ति** = लगातार जागते हुए, अपने आत्मबल की रक्षा करते रहते हैं **ते** = **वे दृळ्हां पुरम्** = दृढ़-अभेद्य नगरी में **आविविशुः** = प्रविष्ट हो जाते है।

विनय - एक नगरी है जोकि बिल्कुल दृढ़ है, अभेद्य है; इसमें पहुँच जाने पर हम पर किसी भी शत्रु का आक्रमण सफल नहीं हो सकता है। क्या कोई उस स्थान पर पहुँचना चाहता है? वहाँ पहुँचने का मार्ग कुछ विकट है, कड़ा है, आसान नहीं है। वहाँ पहुँचने वालों को ज्ञानपूर्वक स्वार्थ-त्याग करते जाना होता है और सदा जागते हुए अपने 'नृम्ण' की-आत्म-बल की रक्षा करते रहना होता है, ये दो साधनाएँ साधनी होती हैं। कई लोग अपने कर्त्तव्य व उद्देश्य का विचार किये बिना यूँही जोश में आकर 'आत्म-बलिदान' कर डालते हैं। ऐसा करना आसान है, परन्तु यह सच्चा बलिदान नहीं होता। इससे यथेष्ट फल नहीं मिलता। इस पवित्र उद्देश्य के सामने अमुक वस्तु वास्तव में तुच्छ है, इसलिए, अब इस वस्तु को स्वाहा कर देना मेरा कर्त्तव्य है-इस प्रकार के स्पष्ट ज्ञान के साथ, बिना किसी जोश के, वे आत्म-बलिदान के नाम से आत्मघात कर रहे होते हैं। वहाँ पहुँचने के लिए तो आत्मा का घात नहीं, किन्तु आत्मा की रक्षा करनी होती है। हम लोग प्रायः क्रोध करके, असत्य बोलकर, इन्द्रियों को स्वच्छन्द भोगों में दौड़ाकर अपना आत्म-तेज, आत्मवीर्य, आत्मबल खोते रहते हैं, परन्तु वे पुरुष अपने इस 'नृम्ण' = आत्मबल की बड़ी सावधानी से, सदा जागरूक रहते हुए, बड़ी चिन्ता से, रक्षा करते हैं। वे पल-पल में अपनी मनोगति पर भी ध्यान रखते हुए देखते रहते हैं, कि कहीं अन्दर कोई आत्मबल का क्षय करने वाला काम तो नहीं हो रहा है। एवं, रक्षा किया हुआ आत्मबल ही उस दृढ़ पुरी में पहुँचाने वाला है। वास्तव में ये दोनों साधनाएँ एक ही हैं, यदि हम इनके इस सम्बन्ध पर विचार करें कि ऐसे लोग आत्मबल की रक्षा करने के लिए शेष प्रत्येक वस्तु का बलिदान करने को उद्यत रहते हैं और ये सदा इतने सत्य के साथ आत्मबलिदान करते जाते हैं कि उनके प्रत्येक आत्मबलिदान का फल यह होता है कि उनका आत्मबल बढ़ता है। आओ! हम भी आत्महवन करते हुए और आत्मबल की रक्षा करते हुए चलने लगें और उस मार्ग के यात्री हो जाएँ जो अभयता, अजातशत्रुता , अमरता और अभेद्यता की दृढ़ पुरी में पहुँचाने वाला है।

-: साभार:-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

कैसी है ये जातिवाद की कथा?

कथावाचक संग्राम : समाज को तोड़ने वाला या जोड़ने वाला?

इटावा में ब्राह्मणों ने यादव कथावाचक की चोटी काटकर सिर मुंडवा दिया। महिला के पैर पर नाक रगड़वाई। कथावाचक के साथी से भी मारपीट कर उसका सिर मुंडवा दिया और हारमोनियम भी तोड़ दिया। साइकिल के पंप से गाड़ी में हवा भरवाई। आरोपियों ने कहा कि ब्राह्मणों के गांव में भागवत पाठ करने की हिम्मत कैसे की। मामला बकेवर थाना क्षेत्र के दादरपुर गांव का है। कथावाचक ने कहा कि यादव होने की वजह से मेरे साथ मारपीट की गई है। पुलिस ने मामले में चार लोगों को गिरफ्तार किया है।

इस घटना ने एक नई बहस को जन्म दे दिया है। बहस इस बात पर हो रही है कि क्या कथा वाचन का अधिकार सिर्फ ब्राह्मण को ही है? क्या किसी दूसरी जाति के लोग कथा वाचन नहीं कर सकते? सोशल मीडिया के साथ-साथ सभी जगह इस मुद्दे पर चर्चा हो रही है। कई लोग यह कहते हैं कि जिनके पास जानकारी है, वे इसका वाचन कर सकते हैं। लेकिन कई लोगों का यह भी मानना है कि सिर्फ ब्राह्मणों को ही कथा वाचन का अधिकार है।

यानि इटावा में कथावाचक की चोटी काटने से जातिवाद पर बहस शुरू हुई है। बहस हो रही है व्यास पीठ की गरिमा की, बहस बढ़ते-बढ़ते यहां तक पहुंच गई कि किसी ने इसे कथावाचन से जोड़ा तो किसी ने कथा के नाम पर हो रहे धंधे से जोड़ दिया? आपको याद होगा कुछ साल पहले जब कथावाचकों को लेकर सोशल मीडिया पर लोग उबल पड़े थे। जब भागवत कथा करने चिन्मयानंद बापू, साध्वी चित्रलेखा, मोरारी बापू समेत कई कथावाचक अली मौला कर रहे थे। कोई मुबारक खान की कथा सुना रहा था तो कोई अजान नमाज से आज के फायदे बता रहा था। मोटी फीस लेकर कथा करने वालों के आगे स्वयं को पूरी तरह से समर्पित कर चुकी श्रद्धालु जनता इसका विरोध नहीं कर रही थी। क्या उस समय व्यासपीठ की गरिमा बढ़ रही थी?

लेकिन आज बहस ये नहीं है, बहस है कि क्या जातीय रूप से ब्राह्मण ही कथा कर सकता है, भले ही वह स्कूल भी ना गया हो और दूसरी ओर एक विद्वान जो गैर ब्राह्मण है, वह कथा नहीं कर सकता? यह सवाल इस कारण भी उठ रहा है कि थोड़े दिन पहले एक कथावाचक देविका पटेल को भी जाति के चलते यह अपमान झेलना पड़ा था।

कहा जा रहा है कि व्यास पीठ पर सिर्फ ब्राह्मणों का अधिकार है। अगर किसी दूसरी जाति के व्यक्ति ने सारे ग्रंथों का पाठ किया हो तो क्या उसे कथा वाचन का अधिकार नहीं है? जबकि दूसरी जाति के कथावाचक कह रहे हैं कि जो ब्रह्म में लीन है, वही है ब्राह्मण। जो विद्या में प्रवीण है, वही है ब्राह्मण। जाति से सभी शूद्र पैदा होते हैं। उसके बाद कर्म उसकी जाति तय करते हैं। ऐसा कहीं नहीं लिखा है कि ब्राह्मण ही कथा कर सकते हैं।

ऐसे में एक सवाल यह भी उठ रहा है कि वृन्दावन में छोटे-बड़े कथावाचक बनाने के सेंटर खुले हुए हैं, जो गुरुकुलों के नाम से चल रहे हैं। हर एक कथावाचक सेंटर की अपनी फीस है। भक्ति वेदांता गुरुकुल नामक कथित गुरुकुल में एक बच्चे के लिए एक साल का शुल्क 2.5 से 3 लाख रुपये है, जबकि गुरुकुल वृंदावन में एक साल की फीस 25 हजार है। इसके अलावा, कुछ की फीस 75 हजार से एक लाख तक है, यानी वृन्दावन में कथावाचक की सबकी अपनी अलग-अलग फीस

...आपको याद होगा कुछ साल पहले जब कथावाचकों को लेकर सोशल मीडिया पर लोग उबल पड़े थे। जब भागवत कथा करने वाले चिन्मयानंद बापू, साध्वी चित्रलेखा, मोरारी बापू समेत कई कथावाचक अली मौला कर रहे थे। कोई मुबारक खान की कथा सुना रहा था तो कोई अजान नमाज से आज के फायदे गिना रहा था। मोटी फीस लेकर कथा करने वालों के आगे स्वयं को पूरी तरह से समर्पित कर चुकी श्रद्धालु जनता इसका विरोध तक नहीं कर रही थी। क्या उस समय व्यासपीठ की गरिमा बढ़ रही थी? .....

है। जब यह फीस ली जाती है और बच्चे का एडमिशन किया जाता है, क्या तब यह घोषणा गुरुकुल की ओर से की जाती है कि इस अमुक जाति से नहीं है तो आगे चलकर कथा नहीं कर सकता क्योंकि व्यासपीठ पर ब्राह्मण का ही अधिकार है?

ऐसे कई सारे सवाल सोशल मीडिया पर चल रहे हैं। इस घटना के बाद राजनीति भी चरम पर है और जातिवाद भी, लेकिन सवाल है कि कथावाचक बनकर ये लोग कौन सा ज्ञान दे रहे हैं? कोई कथावाचक योगेश्वर कृष्ण जी महाराज को माखन चोर, कोई कान्हा, गोपियों के कपड़े चुराने वाला, हजारों गोपियों के साथ रासलीला रचाने वाला, राधा का प्रेमी, ठाकुर, लीलाधर रसिक, गोपी प्रेमी न जाने क्या-क्या नामों से पुकारकर अपना धंधा चला रहे हैं। इससे इनका मनोरथ तो पूरा हो जाता है, लेकिन कहीं न कहीं योगीराज श्री कृष्ण जी का वास्तविक चरित्र नष्ट हो जाता है।

मामला केवल यहाँ तक सीमित नहीं है। अगर व्यास पीठ पर जातीय रूप से ब्राह्मण का अधिकार है, तो यह मनुस्मृति के विरुद्ध है क्योंकि मनुस्मृति में ऐसा नहीं है। उसमें ब्राह्मण वर्ण का उल्लेख है और यह भी दिया गया है कि विद्वत्ता प्राप्त करके एक शूद्र भी ब्राह्मण बन सकता है। मनुस्मृति उठाइए, असली वाली मनुस्मृति, उसमें राजकीय स्तर पर समाज के कार्यों को चार भागों में बांटा गया है। फिर आज का संविधान उठाइए, देखिए उसमें गवर्नमेंट जॉब में ग्रुप ए से लेकर डी तक ठीक उसी परंपरा का उल्लेख है।

सवाल केवल इतना भर नहीं है। आज का युग तार्किक युग है। मध्यकाल का जातिवाद, ऊंच-नीच गुजरे ज़माने की बात हो चुकी है। महिलाएं वेद मंत्र पढ़ रही हैं, ग्रंथों का स्तुति गान कर रही हैं। आज के दौर में धर्म को एक जाति या वर्ग के खूंटे से बांधना और उसे आगे लेकर नहीं चला जा सकता है। धर्म सर्वसमाज का होता है और सर्व समाज का अंग है।

- शेष पृष्ठ 7 पर

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

30 जून, 2025
से
6 जुलाई, 2025

"आर्य समाज की राष्ट्र निर्माण में भूमिका" विषय पर संगोष्ठी

भारत राष्ट्र की स्वाधीनता के सूत्रधार थे, महर्षि दयानन्द सरस्वती - विनय आर्य, महामन्त्री

विवेकानन्द इंटरनेशनल फाउंडेशन के तत्त्वावधान में चाणक्यपुरी नई दिल्ली में सम्पन्न हुई संगोष्ठी

महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 200वें जयंती वर्ष और आर्य समाज के 150 वें स्थापना वर्ष को लेकर संपूर्ण भारत और विश्व में हर स्तर पर चिंतन-मनन की एक धारा प्रभावित हो रही है। इस क्रम में विवेकानंद इंटरनेशनल फाउंडेशन द्वारा 25 जून 2025 को 3 - सन मार्टिन मार्ग चाणक्यपुरी नई दिल्ली के सभागार में **''राष्ट्र निर्माण में आर्य समाज की भूमिका''** विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन संपन्न हुआ। जिसमें डॉ. अरविंद गुप्ता, प्रो. शशिप्रभा कुमार, प्रो.कमलेश कुमार चोकसी, प्रो. वीरेंद्र कुमार अलंकार, प्रो.दिनेश चंद्र शास्त्री, प्रो. रणवीर सिंह, डॉ. वेदपाल शास्त्री और दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने इस महत्वपूर्ण विषय को लेकर अपने शोधपरक विचार भाषण रूप में प्रस्तुत किये।

इस अवसर पर सभा महामंत्री जी ने भारत की स्वाधीनता में आर्य समाज का योगदान पर अपने उद्बोधन में बताया कि

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी का जन्म 1824 को गुजरात के टंकारा ग्राम में हुआ। आर्य समाज की स्थापना 1875 में हुई और महर्षि दयानंद सरस्वती जी 1863 में मथुरा से शिक्षा प्राप्त करके कार्यक्षेत्र में उतरे। उससे पहले महर्षि दयानंद ने पूरे देश का भ्रमण करके समझा और जाना कि हमारे देश की यह दुर्दशा किस कारण से हुई है। महर्षि की सबसे बड़ी कामयाबी यह मानी जाएगी कि उन्होंने 1860 में यह पहचान लिया था कि भारत गुलाम है और लंबे समय तक आक्रांता इस देश में रहे, एक के बाद एक आए आक्रांताओं को लगा कि भारत बड़ा संपन्न देश है, यहां मंदिरों में बड़े-बड़े खजाने हैं और इस कारण से वे भारत को लूटने के लिए यहां पर आए, लेकिन यहां आकर उन्होंने देखा कि यहां तो कोई विरोध करने वाला ही नहीं, कोई इस संपदा की रक्षा करने वाला ही नहीं है, तो फिर वे यहां अपना आधिपत्य जमाकर बैठ गए।

1700 ई॰ तक लगभग पूरे भारत पर मुगलों का अधिकार हो गया था और जब दूसरे लोगों को लगा कि भारत जैसे संपन्न देश पर मुगल राजा बन सकते हैं तो ईस्ट इंडिया कंपनी ने भी विचार किया कि हम भारत में जाकर व्यापार करेंगे, उन्होंने देखा कि इन बंटे हुए राजाओं को जीतना आसान है, पहले लूटने वाले आए और दूसरे व्यापार करने के बहाने से आए, 1757 में उन्हें व्यापार करने का अधिकार मिल चुका था, लेकिन अग्रेंजो को लगा कि व्यापार से सही शोषण नहीं हो सकता इसके लिए उन्होंने प्लासी का युद्ध लड़ा। जो दो सैनाएं लड़ रही थी, एक मुगलों की तरफ से और दूसरी अंग्रेजों की तरफ से, विडंबना तो यह थी कि उन दोनों सेनाओं में सैनिक भारतीय थे, कुछ क्लाइव की तरफ से लड़ रहे थे और कुछ सराजू तोला के लिए लेकिन दोनों तरफ के सैनिकों को यह पता नहीं था कि यह दोनों आक्रांता हमारे देश पर अधिकार जमाने के लिए लड़ रहे हैं, क्योंकि उन्हें अपने राष्ट्र को स्वाभिमान का कोई ध्यान नहीं था, उन्हें यह भी नहीं पता था कि हम जिस राष्ट्र के नागरिक हैं, उसीके ऊपर यह अपना आधिपत्य जमाना चाहते हैं, हमारी यह स्वाभिमान की सोच लंबे समय तक सोई रही, उस समय हमें बताने वाला भी कोई नही था कि यह भारत है और हम इसके मूल निवासी हैं, उस समय भारतीय सैनिक केवल रोटी के लिए लड़ रहे थे।

देश के छोटे-छोटे राजवाड़ों के राजाओं को अपनी सत्ताओं की चिंता थी, मेरी झांसी, मेरा पटियाला, मेरा राजस्थान, मेरा बंगाल, बस मेरा राज्य सुरक्षित रहे। 1757 से लेकर 1857 तक का जो यह 100 वर्ष का इतिहास है, इसमें देश को अलग-अलग तरीके से खूब लूटा लेकिन 100 वर्षों के बाद एक क्रांति की चिंगारी पैदा हुई , और वह चिगारी थी कि हमें बहादुर शाह जफर को भारत का राजा बनाना है, फिर से मुगल सत्ता को वापस लाना है, अंग्रेजों का लक्ष्य था कि अपनी सत्ता को पुन: स्थापित करना है अंग्रेजों ने हमारी कमजोरी देखी तो उन्होंने सिखों को अलग किया, हिंदुओं को अलग किया, हमारा साथ दो। इस कारण भारतीय दो हिस्सों में बंट गए, एक तरफ मुगलों की सेना और दूसरी तरफ अंग्रेजों की सेना लेकिन जो सबसे बड़ा परिवर्तन आया है, जिसका अंग्रेजों को लाभ मिला, वह था रानी विक्टोरिया भारत की मालकिन बन गई और उसने कहा कि अब से पहले ईस्ट इंडिया कंपनी ने अत्याचार किया, भारतीयों का शोषण किया लेकिन अब चिंता करने की जरूरत नहीं है, जैसा व्यवहार महारानी अपने देशवासियों के साथ करती है वैसे ही सब भारतीयों के साथ होगा, माता-पिता की तरह, अपने बच्चों की तरह पालन पोषण किया जाएगा।

अब भारतीयों को भी लगा कि ठीक है अब हमारे ऊपर अत्याचार नहीं होगा अब हम भी इस्ट इंडिया कंपनी के नागरिक बन गए हैं, यही विचार महर्षि दयानंद को नहीं भाया, यहां किसी के मन में विचार नहीं था कि यह हमारा देश है, हम इसके नागरिक हैं और हमारा अपना शासन इस पर होना चाहिए, राष्ट्र और राष्ट्रभक्त फिर कैसे पैदा होते। जब सब लोग रजवाड़ों में बंटे हुए थे और सबको अपने-अपने राज्य की चिंता थी, राष्ट्र की किसी को भी चिंता नहीं थी।

ऐसे समय में ऋषि दयानंद ने प्रेरक वाक्य लिखे और वही वाक्य क्रांति का कारण बन गया, महर्षि का वह वाक्य था कि **''कोई कितना ही करें किंतु जो स्वदेशी राज्य होता है वही सर्वोपरि और उत्तम होता है अथवा मत मतांतर के आग्रह रहित अपने पराए या पक्षपात शून्य माता- पिता के समान कृपा और न्याय के साथ भी विदेशी राज्य पूर्ण सुखद नहीं होता।** यह वाक्य अपने आप में अत्यंत गहरे अर्थ को लिए हुए है, इससे पहले यह कोई नहीं मानता था कि यह देश मेरा है, मैं इस देश का नागरिक हूं, ऋषि दयानंद ने सबसे पहले स्वदेशी राष्ट्र की संकल्पना की देन दी। दूसरी सबसे बड़ी देन महर्षि दयानंद ने आर्यावर्त की प्राचीन इमारत के विषय में देश को बताया कि भारत केवल इतना ही नहीं है, जितना हम इसे देख रहे हैं, बल्कि ईरान-इराक से लेकर जावा, सुमात्रा, इंडोनेशिया तक अखंड आर्यावर्त था। हमारे पूर्वज ही इसके राजा थे, सारी दुनिया पर हमारा साम्राज्य था, जब सबको यह पता लगा यह देश तो मेरा था तभी उसके लिए लड़ने की तैयारी हुई, हमारे इतिहास को बदलने की कोशिश की गई, जब अंग्रेजों को बताया गया कि तुम बाहर से आए हो, तो उन्होंने भी कहना शुरू कर दिया कि तुम भी बाहर से आए हो, उन्होंने इतिहास को बदलने का पूरा प्रयास किया।

ऋषि दयानंद ने कहा आर्य इसी देश के मूल निवासी हैं, आर्यावर्त विश्वगुरु था और सारी दुनिया यहां ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करती थी, इसलिए तो भारत विश्वगुरु था। जब यह स्वाभिमान जागा, जब इन विचारों का प्रचार हुआ, तब देश में एक नई विचारधारा प्रवाहित हुई, यह देश हमारा है, का संदेश ऋषि दयानंद की सबसे बड़ी देन है।

महर्षि अनेक-अनेक स्थानों पर लिखा, भाषण दिए और एक क्रांति को जन्म दिया, उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना भी की, आर्याभिविनय पुस्तक में लिखा कि - 'हे ईश्वर, हम किसी के अधीन न रहें'। 1883 में जिनके कारण यह क्रांति फैली, महर्षि दयानंद सरस्वती जी तो चले गए लेकिन उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज और डीएवी शिक्षण संस्थानों के माध्यम से इसका खूब प्रचार-प्रसार हुआ। लेकिन 12 वर्ष के बाद ''इंडियन नेशनल कांग्रेस'' की स्थापना की गई, यह अंग्रेजों की एक योजना थी क्योंकि आर्य समाज का प्रभाव लगातार बढ़ रहा था, महर्षि दयानंद की विचारधारा अपना रंग दिखा रही थी। 1865 से लेकर 1885 तक 20 वर्ष में महर्षि की प्रेरणा और उनकी राष्ट्र के प्रति संकल्पना इतनी प्रभावित हो रही थी कि उसको देखकर अंग्रेजों ने ''इंडियन नेशनल कांग्रेस'' की स्थापना की, क्योंकि सारा जो शिक्षित समाज था, वह आर्य समाज के साथ जुड़ा हुआ था। उनको यह लगा कि अगर हमने अपनी विचारधारा के अनुसार एक बड़ा संगठन नहीं बनाया, तो देर हो जाएगी। कांग्रेस के 30 वर्षों के अधिवेशन में केवल **long live Victoria** की कामना की जाती रही। इंडियन नेशनल कांग्रेस राष्ट्र को स्वाधीन करने के लिए प्रयासरत नहीं थी, वह तो कुछ अधिकार चाहती थी और कुछ नौकरियों की इच्छा रखती थी। इसलिए कांग्रेस में दो दल बने ''एक नरम दल और एक गरम दल'', जो गरम दल था वे सब महर्षि दयानंद सरस्वती जी के शिष्य थे और उनकी विचारधारा से प्रभावित थे, सत्यार्थ प्रकाश से प्रेरित थे। चाहे उनमें लाला लाजपत राय हो, या फिर रामप्रसाद बिस्मल, चंद्रशेखर आजाद, राजेंद्र लाहिड़ी, अशफाक उल्ला खां या फिर भगत सिह। भगत सिंह के दादाजी सरदार अर्जुन सिंह जी ने महर्षि के साक्षात दर्शन किए थे और संकल्प लिया कि मैं अपने पूरे परिवार को देश की आजादी के लिए समर्पित कर दूंगा, परिणामस्वरूप सरदार भगत सिंह, उनके पिता, चाचा और पूरा परिवार देश के लिए समर्पित हो गया। इससे पता चलता है कि देश की आजादी मे सर्वोपरि योगदान आर्यसमाज का था।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं आर्यसमाज स्थापना के 150वें वर्ष के अवसर पर

आर्य समाज 150 मानव सेवा के स्वर्णिम वर्ष 1875 - 2025

वैदिक विचारधारा को विश्वभर में गुंजायकमान करने के संकल्प के साथ

भारत की राजधानी दिल्ली में विश्वभर के आर्यों का महाकुम्भ

ज्ञान-ज्योति पर्व महोत्सव के आयोजनों का समापन

200वीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024 सदैव सत्य

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

30 अक्तूबर से 2 नवम्बर, 2025

ओ३म्

कार्तिक, शुक्ल पक्ष ८-९-१०-११ वि.२०८२ (गुरु-शुक्र-शनि-रवि)

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

30 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2025

दिल्ली

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आप सब सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं

संसार के 40 से अधिक देशों से आर्यों की होगी भागीदारी

विश्व की समस्त आर्यसमाजों, प्रतिनिधि सभाओं, विद्यालयों, गुरुकुलों एवं आर्य संस्थानों से अनुरोध है कि ★ महासम्मेलन की तिथियां नोट कर लें ★ इन तिथियों में अपना और अपनी संस्था का कोई भी आयोजन न रखें ★ अपने सम्पर्क में आने वाले सभी महानुभावों एवं संस्थाओं को सूचित करें ★ प्रत्येक आर्यजन सपरिवार इष्ट मित्रों सहित अभी से दिल्ली पहुंचने की तैयारियाँ करें ★ रेलवे आरक्षण 60 दिन पूर्व आरम्भ होते हैं, इसका ध्यान रखें ★सम्मेलन स्थल पर 28 अक्तूबर की रात्रि से भोजन व्यवस्था सभी आगन्तुकों के लिए आरम्भ कर दी जाएगी।

निवेदक :- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ★ ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति ★ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

सम्मेलन कार्यालय : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15- हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001; Mob. 9311721172; Web: www.thearyasamaj.org

सभी पाठकों, अधिकारियों, सदस्यों, कार्यकर्ताओं से अनुरोध है कि सोशल मीडिया - व्हाट्सएप्प, फेसबुक, एक्स, टेलिग्राम, ब्लॉग आदि पर महासम्मेलन प्रचार करें और अपने संस्थान के नोटिस बोर्ड पर भी लगा दें

साप्ताहिक स्वाध्याय

स्वामी दयानन्द की महानता

गतांक से आगे-

वास्तव में राष्ट्रीय भावना और जन-जागृति के विचार को क्रियात्मक रूप देने में सबसे अधिक प्रबल शक्ति उसी की थी। वह पुनर्निर्माण और राष्ट्र-संगठन के अत्यन्त उत्साही पैगम्बरों में से था।

-फ्रेंच लेखक रोम्यां रोलां

हमें वेदों के अध्ययन को प्रोत्साहन देने और यह सिद्ध करने में कि मूर्तिपूजा वेदसम्मत नहीं है, स्वामी दयानन्द के महान् उपकार को अवश्य स्वीकार करना चाहिए। आर्यसमाज के प्रवर्तक वर्तमान जाति-भेद की मूर्खता और उसकी हानियों के विरुद्ध अपने अनुयायियों को तैयार करने के अतिरिक्त यदि और कुछ भी न करते, तो भी वह वर्तमान भारत के बड़े नेता के रूप में अवश्य सम्मान पा जाते।

-जर्मन प्रोफेसर डॉ. विण्टरनीज

मेरे निर्बल शब्द ऋषि की महत्ता का वर्णन करने में अशक्त हैं। ऋषि के अप्रतिम ब्रह्मचर्य, सत्य-संग्राम और घोर तपश्चर्या के लिए अपने हृदय के पूज्य भावों से प्रेरित होकर मैं उनकी वन्दना करता हूं।

मैं ऋषि को शक्ति सुत अर्थात् कर्मवीर योद्धा समझकर उनका आदर करता हूं। उनका जीवन राष्ट्र-निर्माण के लिए स्फूर्तिदायक, बलदायक और माननीय है। दयानन्द उत्कट देशभक्त थे, अतः मैं राष्ट्रवीर समझकर उनकी वन्दना करता हूं।

-साधु टी.एल. वास्वानी

स्वामी दयानन्द निःसन्देह एक ऋषि थे। उन्होंने अपने विरोधियों द्वारा फेंके गए ईंट-पत्थरों को शान्तिपूर्वक सहन कर लिया। उन्होंने अपने में महान् भूत और महान् भविष्य को मिला दिया। वह मरकर भी अमर हैं। ऋषि का प्रादुर्भाव लोगों को कारागार से मुक्त करने और जाति-बन्धन तोड़ने के लिए हुआ था। ऋषि का आदेश है- आर्यावर्त, उठ जाग! समय आ गया है, नए युग में प्रवेश कर, आगे बढ़!

-पाल रिचर्ड (प्रसिद्ध फ्रेंच लेखक)

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू-धर्म के सुधर का बड़ा कार्य किया, और जहां तक समाज सुधार का सम्बन्ध है, वह बड़े उदार हृदय थे। वे अपने विचारों को वेदों पर आधरित और उन्हें ऋषियों के ज्ञान पर अवलम्बित मानते थे। उन्होंने वेदों पर बड़े-बड़े भाष्य किये, जिससे मालूम होता है कि वे पूर्ण अभिज्ञ थे। उनका स्वाध्याय बड़ा व्यापक था।

-प्रो. एफ. मैक्समूलर

स्वामी दयानन्द के सिद्धान्त उनके सत्यार्थ प्रकाश में निहित हैं। यही सिद्धान्त वेदभाष्य भूमिका में हैं। स्वामी दयानन्द एक धार्मिक सुधारक थे। उन्होंने मूर्तिपूजा से अविराम युद्ध किया।

-सर वेलण्टाइन चिरौल

आर्यसमाज समस्त संसार को वेदानुयायी बनाने का स्वप्न देखता है। स्वामी दयानन्द ने इसे जीवन और सिद्धान्त दिया। उनका विश्वास था कि आर्य जाति चुनी हुई जाति, भारत चुना हुआ देश और वेद चुनी हुई धर्मिक पुस्तक है।.

-ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री रेम्जे मैकडॉनल्ड

स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुयायी उन्हें देवता-तुल्य जानते थे, और वह निःसन्देह इसी योग्य थे। वह इतने विद्वान् और अच्छे आदमी थे कि प्रत्येक धर्म के अनुयायियों के लिए सम्मान पात्र थे। उनके समान व्यक्ति समूचे भारत में इस समय कोई नहीं मिल सकता। अतः प्रत्येक व्यक्ति का उनकी मृत्यु पर शोक करना स्वाभाविक है।

-सर सैयद अहमद खां

मेरी सम्मति में स्वामी दयानन्द एक सच्चे जगत-गुरु और सुधारक थे।

-मि. फॉक्स पिट् (जनरल सेक्रेटरी, मॉरल एजूकेशन लीग, लण्डन)

स्वामी दयानन्द सरस्वती उन महापुरुषों में से थे, जिन्होंने आधुनिक भारत का निर्माण किया और जो उसके आचार-सम्बन्धी पुनरुत्थान तथा धर्मिक पुनरुद्धार के उत्तरदाता हैं। हिन्दू समाज का उद्धार करने में आर्यसमाज का बहुत बड़ा हाथ है। रामकृष्ण मिशन ने बंगाल में जो कुछ किया, उससे कहीं अधिक आर्यसमाज ने पंजाब और संयुक्त प्रांत में किया। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण न होगा कि पंजाब का प्रत्येक नेता आर्यसमाजी है। स्वामी दयानन्द को मैं एक धार्मिक और समाज-सुधारक तथा कर्मयोगी मानता हूं। संगठन कार्यों के सामर्थ्य और प्रयास की दृष्टि से आर्यसमाज अनुपम संस्था है।

- नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

-क्रमशः

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुनः प्रकाशित जीवनी 'महर्षि दयानन्द' से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन www.vedicprakashan.com अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Greatness Of Swami Dayanand

Dayanand's character is a matter of envy and sorrow for me...

Maharishi Dayanand was one of the modern sages, reformers and great men of India.

The impact of his life has been immense on India.

-Mahatma Mohandas Karamchand Gandhi

My respectful obeisances to the great Guru Dayanand, whose vision showed truth and unity in the spiritual history of India and whose mind illuminated all parts of Indian life.

To the Guru whose aim was to free India from ignorance, laziness and ignorance of ancient historical elements and bring them to the awakening of truth and purity, I salute him again and again.

...I respectfully pay homage to Dayanand, the guide of modern India, who guided the country on the straight and true path in its heyday.

-Dr. Rabindranath Tagore

He was a true soldier of divine knowledge, a warrior who brought the world under the refuge of the Lord, and an architect of men and institutions, and a heroic conqueror of the obstacles placed by nature in the path of the soul, and thus stood before me a mighty figure of spiritual activity. The mixture of these two words, which according to our feelings are completely different from each other, seems to be the appropriate definition of Dayanand. His personality can be explained as a man who has God in his soul, divine light in his eyes and so much power in his hands that he can make an idol of the desired form from the essence of life and convert imagination into action. He himself was a solid rock. He had a strong power to make things strong and shapely by driving a cube on the rock. In the ancient civilization, there are secret secrets of science, some of which have been discovered, changed and made more enriched and clarified by the modern schools, but others still remain mysterious. Therefore, there is no unreality in Dayanand's belief that scientific and religious truths are contained in the Vedas.

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

Regarding the interpr -etation of the Vedas, I believe that whatever may be the final complete intention, but Dayanand will get the credit that he first invented the innocent way to interpret the Vedas. Out of the darkness of age-old disorder and ignorance tradition, he had extracted the truth with a subtle and penetrating vision. He had the real experience of declaring that Book Religion which was considered to be the creation of Barbarians. Sage Dayanand has obtained the key to those gates which were closed for ages and he opened the sealed springs.

...Rishi Dayanand's law-abiding actions are the sons of his spiritual body, which is beautiful, strong and alive and is the replica of its doer. He was a man who knew clearly and completely what he had been sent for.

-Mr. Arvind Ghosh

Rishi Dayanand has in fused his ill-fated strength, steadfastness and lion-might into India's strength-less body.

Swami Dayanand Saraswati was a man of the highest personality. This Purush Singh was one of those whom Europe often forgets when it makes its perception about India. But one day Europe will be forced to remember it by considering it as its mistake, because in it him there is Karmayogi, thinker and leader. He had a rare combination of talents.

Dayanand did not tolerate the injustice of untouchability and no one else was more enthusiastic supporter of their abducted rights. Dayanand worked with great generosity and courage in improving the deplorable condition of the women of India. In fact, he had the most powerful power in giving practical shape to the idea of national sentiment and mass awakening. He was one of the most ardent prophets of reconstruction and national organization.

-French writer Romyan Rollan

To be Continue............

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

प्रथम पृष्ठ का शेष

जितने भी आयोजन हुए हैं, उनसे गांव- गांव, शहर-शहर, नगर-नगर, गली-गली महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं और आर्य समाज के सिद्धांतों को जन-जन तक, घर-घर तक पहुंचाने का पूरा प्रयास सफलता पूर्वक किया गया है। प्रिंट मिडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से भी खूब प्रचार-प्रसार किया गया है और किया जा रहा है। भारत की सभी प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं, विदेशों की आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों, वानप्रस्थ आश्रमों, वृद्धाश्रमों, गुरुकुलों, कन्या गुरुकुलों, अनाथालयों, डी.ए.वी. शिक्षण संस्थानों, आर्य विद्यालयों, आर्य प्रतिष्ठानों और विश्व व्यापी समस्त आर्य परिवारों ने सभी आयोजनों में पूरी निष्ठा से अपनी सहभागिता और योगदान देकर ऋषि भक्ति, राष्ट्र भक्ति, ईश्वर भक्ति का संदेश संसार को दिया है, महर्षि दयानंद सरस्वती जी और अपने आर्य संन्यासियों, विद्वानों, बलिदानियों, महापुरुषों को नमन करके स्वयं को गौरवान्वित किया है।

क्यों विशेष है, अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2025

आर्य समाज द्वारा आर्य महासम्मेलन और अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों का इतिहास अत्यंत पुराना है। समय-समय पर आर्य समाज महासम्मेलन और अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सफलता पूर्वक मनाता आ रहा है। किन्तु महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 200वें जयंती वर्ष और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के आयोजनों की लंबी श्रृंखला के समापन समारोह के रूप में यह विशेष तथा स्वर्णिम अवसर सिद्ध हो रहा है, इससे पूर्व पूरे भारत में और विश्व के कई देशों में भव्य आयोजन हुए हैं, उन सब कार्यक्रमों से अनेक लोग आर्य समाज के संगठन से जुड़े हैं, उन सबको इस भव्य और विशाल अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में सम्मिलित होकर अपने विराट आर्य समाज परिवार से मिलने का अवसर प्राप्त होगा, 200 और 150 वर्षों का लंबा अंतराल, इस कालखंड में महर्षि दयानंद सरस्वती जी से लेकर स्वामी श्रद्धानंद, लाला लाजपत राय, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, पंडित लेखराम, लाखों स्वतंत्रता सेनानी, हजारों सत्याग्रही, आर्य समाज के आधार स्तंभ समाज सुधारक, अज्ञान , अविद्या अंधविश्वास, ढोंग, पाखण्ड, और कुरीतियों से समाज को बचाने के लिए अपनी, अपने परिवार की परवाह न करते हुए जान की बाजी लगाने वाले रणबांकुरों के आदर्श जीवन से प्रेरणा लेने का अवसर प्राप्त होगा, हम क्या थे, क्या हो गए और भविष्य में क्या कर सकते हैं, इन महत्वपूर्ण विषयों पर एक नया चिंतन, मंथन मिलेगा, वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों को, महर्षि दयानंद और आर्य समाज की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने के नए-नए तरीके मिलेंगे। बदलते परिवेश में व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर चलते हुए भी अर्थात पूरी तरह से आधुनिक होकर भी अपने मूल सिद्धांतों से समझौता नहीं करने की शिक्षा मिलेगी। हर आयु वर्ग के लोगों को वह सब कुछ मिलेगा जिससे हम शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करके अपने जीवन के लक्ष्य और उद्देश्य को प्राप्त करने में सक्षम होंगे। इसलिए शीघ्रातिशीघ्र अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 की तिथियां 30 अक्टूबर से 2 नवम्बर को सामने रखकर अपना, अपने परिवार और मित्रों का दिल्ली पहुंचने के लिए रेल टिकट आरक्षण यथाशीघ्र कराएं और आर्य समाज के विशाल, विराट, महापर्व अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली के साक्षी अवश्य बनें। **नोट-रेल टिकट आरक्षण 60 दिन पूर्व कराया जा सकता है।**

पृष्ठ 2 का शेष — कथावाचक संग्राम : समाज को तोड़ने .....

अतीत में हमने जाति, छुआछूत, ऊंच-नीच जैसी गलतियाँ की, जिनका परिणाम आज भी भुगतना पड़ता है।

असल में गंभीरता से देखा जाए, तो भारत में जाति ऐसे समुदाय है जिसका अपना विकसित जीवन है और इसकी सदस्यता जन्म से निश्चित कर दी गई है।भारत का प्रत्येक व्यक्ति अपनी सामाजिक स्थिति जानता है और जातियों के पद-सोपान में ब्राह्मण सबसे ऊपर माना जाता है। जातियों के आधार पर सामाजिक आदान-प्रदान के प्रतिबंध लगे रहते हैं। कुछ जातियाँ विशेष प्रकार के व्यवसायों को अपना पुश्तैनी अधिकार समझती हैं। जातियों की परिधि में ही वैवाहिक आदान-प्रदान होता है और जातियाँ कई उप-जातियों में विभक्त होती हैं। उप जातियों में भी वैवाहिक परिसीमाएँ हैं।

जब जाति का राजनीति से सम्पर्क सूत्र देखा जाए, तो स्वाधीनता संग्राम के दौरान ऐसा दीखता था कि जनता पर जातिवाद का प्रभाव कम हो रहा है, किन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत जातिवाद ने फिर जोर पकड़ा और वयस्क मताधिकार व्यवस्था देश में लागू कर दिए जाने के कारण यह एक राजनीतिक शक्ति के रूप में उदित हुआ। जातियों के विकास के नाम पर राजनीतिक दल बने, उनके सामाजिक विकास की बात हुई। जातीय आंदोलन सत्ता तक टकराए।

क्या आपने कभी अध्ययन किया या सोचा है कि आखिर क्या कमजोरियां सनातन समाज में पैदा हुई और उन कमजोरियों को नकारने के बावजूद उन्हें ही धर्म और समाज का हिस्सा बना डाला। वे कमजोरियां बाद में बीमारियाँ बनी और इन्हीं बीमारियों के कारण सनातन धर्म का पतन होने लगा।

सोचिए, हानि किसकी हुई? लोगों की या सनातन धर्म की? जातीय विद्वेष धर्म ने दिया या संचालित लोगों ने? शोषण धर्म की देन था या लोगों की सोच का? कुछ भी हुआ, हानि तो सनातन धर्म की हुई न? अगर जातिगत आधार पर किसी को कथा करने से रोकने जैसे कार्य होंगे, तो निश्चित ही इससे धर्म की हानि होगी। अगर ऐसी कमजोरियां आप खोजेंगे, तो अन्य भी बहुत सारी कमजोरियां आपको मिल जाएंगी। धर्म और ईश्वर पर सबका बराबर अधिकार है।

हमें नहीं पता इन लोगों के धार्मिक ज्ञान की सीमा कितनी है, इनकी सोच का दायरा कितना बड़ा है, ये लोग धर्म को कितनी गति देने की इच्छा रखते हैं, किन्तु इतना जरूर पता है कि ऐसे कथित धर्माचार्यों को अपने इतिहास का ज्ञान जरूर न्यून है। यदि एक भी दिन ये लोग अपना इतिहास उठाकर पढ़ लें, तो शायद जान पाएंगे कि इस जातिवाद और छुआछूत के कारण ही हम अफगानिस्तान से सिमटते-सिमटते दिल्ली तक रह गए। इस सब के बाद भी हम नहीं समझ रहे हैं। आज भी देश के कोने-कोने से आ रही धर्मांतरण की खबरों के बीच, जहाँ धर्माचार्यों, शंकराचार्यों, पुजारियों, महंतों को हिंदू समाज को दिशा दिखानी चाहिए, लेकिन लगता है कि खुद उन्हें दिशा दिखाने की जरूरत है। क्योंकि घटनाओं या खबरों पर ये लोग मौन रहकर अपनी मूक स्वीकृति सी प्रदान कर रहे हैं।

2016 की वो खबर सबको याद होगी जब उत्तराखंड के चकराता के पोखरी गांव के पौराणिक शिल्गुर देवता मंदिर में दलितों को मंदिर में प्रवेश दिलाने गए सांसद को ही लोगों ने पीट दिया था, तो सोचिए, साधारण आदमियों की क्या दशा होगी। बात सिर्फ दलित मंदिर प्रवेश के अधिकार की नहीं थी। ये अधिकार तो हमारा कानून भी देता है। बात है सामाजिक चेतना की। अपने इतिहास से सीखने की है। स्वामी श्रद्धानंद के विचारों को उनके द्वारा लिखित पुस्तकों को पढ़ने से ही ज्ञात हो जाएगा कि अतीत के कालखंड में हमने जातिवाद के कारण धार्मिक रूप से कितना नुकसान उठाया है। किस तरह स्वामी श्रद्धानंद ने मन के कपाट खोलकर समरसता का दीप जलाया था। आज एक ओर तो हिंदू समाज के धर्माचार्य दलितों के धर्मांतरण पर चिंता जताते दिखते हैं। दूसरी ओर वे ऐसी जातिवादी घटनाओं की अनदेखी करते हैं। जबकि हिंदुओं के बड़े धर्माचार्यों को स्वयं सामने आकर यह दीवार गिरानी होगी, एक वैचारिक आधुनिकता लानी होगी, इसके आए बिना तो इस समस्या का निर्णायक हल होने से रहा। जब वे स्वयं सामने आएंगे, वे कहेंगे कि कथा करने के अधिकार पर किसी का लाइसेंस नहीं है, तो हजारों मुकुटमणि और देविका खड़ी होंगी जो अपने-अपने समाज को जागरूक करेंगी। वरना यह जातिवाद बढ़ता ही चला जाएगा। **-संपादक**

वैदिक धर्म प्रचार के इच्छुक उपदेशक, प्रचारक तथा भजनोपदेशक आमन्त्रित हैं

वैदिक विचार धारा के विस्तार और प्रचार हेतु एक व्यवस्थित प्रचार-योजना बनाई जा रही है जिसके अन्तर्गत आर्यसमाज और वैदिक विचारधारा के प्रति समर्पित, व्यवहार कुशल और चरित्रवान व्यक्तियों के द्वारा पूरे देश में व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार करवाया जायेगा। इस हेतु निर्धारित चयन प्रक्रिया के अन्तर्गत चयन किये गये उपदेशकों, प्रचारकों तथा भजनोपदेशकों को यह जानकारी प्रदान की जायेगी कि एक निर्धारित योजना के अन्तर्गत प्रचार-प्रसार का कार्य किन किन मुख्य विषयों को आधार बनाकर एक रूपता के साथ सभी स्थानों पर किया जाये। प्रचार के दौरान वितरित की जाने वाली प्रचार सामग्री तथा साहित्य की भी जानकारी दी जायेगी।

इस हेतु प्रारंभिक रूप में 10 प्रचारकों का चयन किया जायेगा जो भारत के हिन्दी भाषी राज्यों तथा गुजरात और महाराष्ट्र राज्यों में प्रचार करेंगे। चयनित महानुभावों को कम से कम तीन वर्ष संगठन के साथ कार्य करना होगा। सभी प्रचारकों को सम्मानजनक मानदेय और आवश्यक प्राथमिक सुविधाएं उपलब्ध कराई जायेंगी।

स्वाध्याय-शील, कुशल-वक्ता, व्यवहार-कुशल तथा मिशनरी भावना वाले जिज्ञासु सादर आमन्त्रित हैं। गुरुकुलीय शिक्षा प्राप्त शास्त्री एवं आचार्य तथा प्रचार-प्रसार के कार्य में अनुभवी आवेदकों को प्राथमिकता दी जायेगी। कृपया शीघ्र ही फोटो सहित अपनी शैक्षणिक योग्यता तथा अनुभव आदि का पूर्ण विवरण निम्न पते पर भेजें अन्यथा मेल करें।

भवदीय

(सुरेशचन्द्र आर्य)
प्रधान-सार्वदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

आवेदन भेजने का पता
श्री प्रकाशजी आर्य,
आर्यसमाज मन्दिर, 2795, पं.राजगुरु शर्मा मार्ग (इन्दौर रोड),
महू-453441(म.प्र.), मो.9826655117, Email ID: prakasharyamhow@gmail.com

⑧ साप्ताहिक
आर्य सन्देश
सोमवार 30 जून, 2025 से रविवार 6 जुलाई, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 3-4-5/07/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 2 जुलाई, 2025

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
30-31 अक्तूबर - 1-2 नवम्बर, 2025 (गुरु-शुक्र-शनि-रवि)

रेल यात्रा से पधारने वाले आर्यजन कृपया ध्यान दें

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं आर्यसमाज के 150वें स्थापना वर्ष के ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव के आयोजनों के समापन के रूप में आयोजित **आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2025** की तिथियां **30 अक्तूबर से 2 नवम्बर 2025** (बृहस्पतिवार से रविवार) सुनिश्चित हैं।

इस अवसर पर दिल्ली पधार रहे समस्त आर्यजनों की सुविधा हेतु सूचित किया जाता है कि रेलवे आरक्षण 60 दिन पूर्व आरम्भ हो जाते हैं, कृपया इसका ध्यान रखते हुए रेलवे आरक्षण कराएं। जिन स्थानों से किन्हीं विशेष दिनों में ही ट्रेन चलती हैं और उनकी ट्रेन दिल्ली 28 या 29 अक्तूबर को दिल्ली पहुंचती है तो उनके लिए विशेष रूप से सम्मेलन स्थल पर ही आवास एवं भोजन व्यवस्था 28 की रात्रि से उपलब्ध कराई जाएगी। महासम्मेलन में दिल्ली पधारने वाले समस्त आर्यजनों को दिल्ली के प्रमुख रेलवे स्टेशनों - नई दिल्ली, दिल्ली जंक्शन, हजरत निजामुद्दीन एवं आनन्द विहार रेलवे स्टेशनों से महासम्मेलन स्थल तक पहुंचाने के लिए बसों की व्यवस्था की गई है। आप कहां से, कब, कितने बजे, किस स्टेशन पर पहुंच रहे हैं, इसकी सूचना अपने ग्रुप लीडर के माध्यम से ग्रुप लीडर के नाम, पते, फोन नं. और ग्रुप में आने वाले सदस्यों की सूची बनाकर सम्मेलन कार्यालय के पते '**15 हनुमान रोड नई दिल्ली-110001**' पर भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल करें। अपने ईमेल/पत्र पर 'आवास एवं ट्रांसपोर्ट व्यवस्था हेतु' अवश्य लिखें ताकि आपके लिए आवास एवं ट्रांसपोर्ट की व्यवस्था की जा सके। अधिक जानकारी लिए **9311721172** से सम्पर्क करें।

- ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति

सार्द्ध शताब्दी अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नई दिल्ली

आयोजन की तिथियों का विशेष ध्यान रखें आर्यजन

समस्त आर्यजनों की सूचनार्थ है कि कुछ समय पूर्व की दिल्ली में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तिथियां 9-10-11-12 अक्टूबर 2025 की घोषणा गई थीं। किन्तु पर्व-त्यौहारों के होने एवं स्थान की अनुपलब्धता के कारण अब यह सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 30 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2025 को आयोजित किया जाना सुनिश्चित किया गया है। अतः इस परिवर्तन को स्वीकार करें और अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 30 अक्टूबर से 2 नवम्बर, 2025 में दिल्ली पधारने के लिए अपनी तैयारियों में जुट जाएं।

- ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह